राष्ट्रको गांधी-जयन्तीका सन्देश

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ — सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी — अंक ३१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३ अक्तूबर, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

बीसवीं सदीका शहीद

अेक कलाकार अपने चित्र या मूर्तिके जरिये जो कुछ व्यक्त करना चाहता है, अुसे शब्दोंमें समझाना अुसके लिअे अत्यन्त कठिन होता है। और हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि कलाकृतियोंके शाब्दिक वर्णन किस तरह अुनके सच्चे महत्त्वको धुंधला बना सकते हैं या अुन्हें अैसा बौद्धिक स्वरूप दे सकते हैं, जो अुनके सौन्दर्यका मूल्यांकन करने पर अुचित नहीं ठहरता।

मेरी यह कला-कृति अैसे हजारों लोगों द्वारा देखी जायगी, जो बीसवीं सदीकी कलाके प्रवाहोंसे अपरिचित हैं। अगर अैसा नहीं होता, तो अपनी कृति "बीसवीं सदीका शहीद" के स्रोत और स्वरूपके बारेमें मैंने कभी कोअी स्पष्टीकरण देनेका प्रयास न किया होता। अैसे लोग जब कोअी कृति कलाकी अभिव्यक्तिके अुनके जाने-पहचाने हुअे रूपों या स्वाभाविकता (नेचरलिज़्म) से दूर जाती है, तो अुलझनमें पड़ जाते हैं और अुसका विरोध भी करने लगते हैं। साथ ही, जीवनकी भौतिक आवश्यकतायें पूरी करनेके प्रयत्नमें अुनका अितना समय खर्च हो जाता है कि अुन्हें कलाके प्रतीकात्मक सौन्दर्यका अर्थ समझनेका समय ही नहीं मिलता।

अिसलिअे मैं अैसे लोगोंको अपनी चित्रशालामें तैयार की हुअी अिस प्रतिमाके बारेमें कुछ समझानेका यहां प्रयत्न करता हूं। यह कृति बौद्धिक प्रेरणाका नहीं, बल्कि अन्तःप्रेरणाका फल है।

महात्मा गांधीको मैं अिस अराजकतासे भरी हुअी दुनियामें, जहां धर्मान्धता, अन्याय और भौतिक लाभ ही आधुनिक सभ्यताकी प्रेरक शक्तियां हैं, 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की कुछ अवशिष्ट शक्तियोंमें से मानता हूं।

अुनके हिंसापूर्ण अन्तके समाचारसे मुझे गहरा आघात पहुंचा। अैसा लगता है कि यह कृत्य जीवनकी परिस्थितियोंको सुधारनेके शुभ प्रयत्नकी, मानव-समाजको लगभग पशुताके मौजूदा स्तरसे अूंचा अुठानेके प्रयत्नकी बड़ीसे बड़ी निष्फलताका द्योतक है।

फिर भी जब मैंने (अिस समाचारको सुनकर रातभर जागनेके बाद) अितिहासके शहीदोंकी पंक्तिमें खड़े अेक और शहीदकी

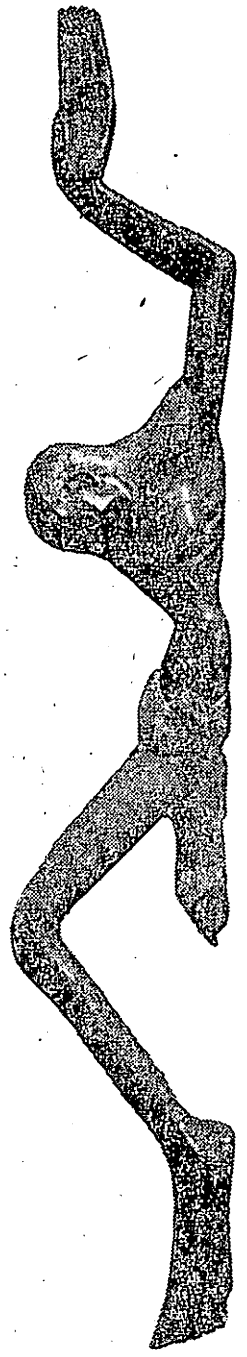

प्रतिमा बनाना शुरू की, तब निष्फलताका यह भाव मुझे छोड़ चुका था। अुसका स्थान अिस महापुरुषके जीवनकी मुख्य विशेषताओंको शिल्प द्वारा व्यक्त करनेकी गहरी निष्ठा और लगनने ले लिया।

अेक पतली, लंबी आकृति शून्यमें लटक रही है — शून्य जो नित्यता या अनन्तताका प्रतीक है। आकृतिका अेक हाथ आकाश तक पहुंचता है और अेक भारी पांव पृथ्वीको छूता है। अिन दो परस्पर विरोधी शक्तियोंके बीच अेक शरीर लटक रहा है, जो अिन शक्तियोंके विरोधसे दुःखी नहीं बल्कि शान्त और स्वस्थ है। सारी आकृति अत्यन्त सीधे ढंगसे तराशी गअी है और सादगीकी छाप डालनेके लिअे हर तरहकी तफसीलसे बचा गया है। वह सादगी जिसे गांधी अपने जीवनमें अत्यन्त महत्त्वका स्थान देते थे; वह शांति और स्वस्थता जिसने गांधीके दुर्बल शरीरको अुन लोगोंके लिअे प्रचंड शक्तिका गढ़ बना दिया था, जो अुनके नेतृत्वमें अन्यायके विरुद्ध लड़ते थे।

हालांकि अिसमें अेक ही हाथ और अेक ही पांव दिखाअी देता है, ये दोनों अवयव अुस दीवार पर अपनी छाया डालते हैं जिसकी पृष्ठभूमिमें यह आकृति लटक रही है। और ये परछाअियां अपना वास्तविक रूप लेकर न दीखनेवाले हाथ-पांवका स्थान ले लेती हैं। अिसलिअे आकृतिके अवयवों और अुनकी परछाअियोंकी परस्पर प्रतिक्रियामें प्रकाश और अंधकारकी, सत्य और असत्यकी, स्थूल और सूक्ष्मकी तथा भौतिक और आध्यात्मिककी रूपकात्मक प्रतिक्रिया निहित है। और अिन शक्तियोंका संघर्ष शांतिके आदर्श द्वारा, शहीद गांधीकी अमर शांति जिसका प्रतीक है, संतुलित रखा जाता है।

अन्तमें, अूंचा अुठा हुआ हाथ यदि आशीर्वाद देता मालूम हो तो वह आशीर्वाद है। यदि वह विरोध प्रदर्शित करनेके लिअे अुठाया हुआ मालूम हो, तो भले वह अन्यायके नित्य विरोधके रूपमें हमेशा अूंचा रहे।

२३-३-'४८ — **विलेम द सैण्डर्स हेंड्रिक्स**

(अंग्रेज़ीसे)

www.vinoba.in

संपत्ति-दानकी कल्पना और विनियोग

संपत्ति-दानका स्वरूप

यह साफ समझ लेना चाहिये कि संपत्तिदान-यज्ञमें कोअी निधि अिकट्ठी करनेकी कल्पना नहीं है। अिस यज्ञकी यही विशेषता है कि अिसमें पानेका तरीका अलग है। यदि कहीं अेक जगह निधि अिकट्ठी करनेकी कल्पना होती, तो अुसे यज्ञ नहीं कहा जाता। 'यज्ञ' शब्द अिसमें निरर्थक नहीं जोड़ा गया है। पूरा समझ-बूझकर जोड़ा गया है। यह अेक अैसा विचार है कि जिससे कोअी बचता नहीं। हरअेकको अिसमें आहुति देनेका मौका मिलता है। जो धर्म-कार्य सबको लागू होता है, जैसे सत्य वगैरा, जो अक्षरशः सार्वजनिक है, यानी सब लोगोंके लिअे है, अुसीको मुख्य धर्म या प्रथम धर्म कहा जाता है। 'नः तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्'। तो संपत्तिदान-यज्ञ आजकलकी दूसरी निधियोंसे बिलकुल भिन्न है। अुसमें हम दान-पत्र लेते हैं, पैसे नहीं। दानका विनियोग दाता खुद ही गरीबोंकी सेवाके लिअे करता है। लेकिन गरीबोंको भी वह पैसेके रूपमें मदद नहीं करेगा। कुछ लोगोंने यह शंका अुठायी है, और वह ठीक भी है कि पैसेका दुरुपयोग होगा। लेकिन संपत्ति-दानमें तो किसी व्यक्तिके लिअे पैसेका अुपयोग होगा ही नहीं। सामुदायिक कामोंके लिअे हो सकता है, जैसे कुअेंके लिअे सिमेंट खरीद ली, या दो-तीन किसानोंको मिलाकर अेक बैलजोड़ी दे दी। अब यह कल्पना करना कि वह बैलजोड़ी भी बेच देगा और फिर अुस पैसेका दुरुपयोग करेगा, कुछ अधिक कल्पना है। हमारी सद्भावनासे अुसके हृदयमें भी सद्भावना पैदा होगी, अिस श्रद्धासे हम लोग चलते हैं। यह कोअी "अंध-श्रद्धा" नहीं, "अनुभव-श्रद्धा" है। जब हम लोग हर गांवमें पहुंचकर घर-घरसे छठा, आठवां या दसवां हिस्सा लेंगे, तब अुनसे कोअी पैसा तो नहीं लेंगे। लोग अनाज देंगे, दूसरी कोअी चीज देंगे। यह जो चीजें मिलेंगी, वह भी समूहको मिलेंगी, गांवोंको मिलेंगी, और अिस प्रकार गांव-गांवमें सामूहिक लक्ष्मी अिकट्ठी होगी। मैं पैसा या संपत्ति शब्द अिस्तेमाल नहीं करता, क्योंकि अुसमें गलतफहमी होनेका संभव है। मैं लक्ष्मी कह रहा हूं। मसलन्, बढ़अी पांच हल बना देगा, दूसरा कोअी दूसरे साधन देगा। तो वह सब मिलाकर सामूहिक लक्ष्मी ही बनेगी। यही चीज हम गांवमें कहेंगे और यही शहर-वालोंको भी समझावेंगे। अुनसे कहेंगे कि आपकी संपत्तिमें दूसरोंका भी हिस्सा है। आप अपने आपको अुसका मालिक क्यों समझते हैं? आप भी अपनी संपत्तिके अेक हिस्सेदार ही हैं। अैसा क्यों समझते हैं कि आपका और समाजका कोअी विरोध है?

समानताकी कल्पना

कारखानेके मालिक और मजदूर दोनोंके हित परस्पर विरोधी क्यों समझे जायं? यह कभी देखा है कि अेक अखिल भारतीय बेटोंकी संस्था हो, और दूसरी अखिल भारतीय बापोंकी संस्था हो? और वे दोनों संस्थायें अपने-अपने हितकी रक्षाके लिअे अेक-दूसरेके विरोधमें काम करें! आज तो शिक्षक और विद्यार्थियोंके संघ बनते हैं, अैसा मानकर कि हमारे हित परस्पर विरोधी हैं। यह सब विपरीत बुद्धि है। आसुरी संपत्तिके लक्षण हैं। शारीरिक श्रम करनेवाले भी हमारी संपत्तिके सहभागी हैं, यह विचार हम संपत्तिवालोंको समझाना चाहते हैं।

व्यापारमें जिस प्रकार साझा होता है, अुस प्रकार मजदूर और मालिकका साझा क्यों न हो? हां, यह साफ है कि मैं समानताकी बात कर रहा हूं। तो शहरवालोंको मैं यही समझाअूंगा कि ग्रामोंमें से आपने भर-भरकर पाया है। अतः गांववालोंका भी अपनी संपत्तिमें अेक हिस्सा समझो। केवल अेक-मुश्त दान देकर छूट जाना मत चाहो। किसी धर्मकार्यसे आदमी छूटना नहीं चाहता। पापकार्यसे छूटना चाहता है। तो मैं संपत्ति-दान देनेवालोंसे कहता हूं कि क्या यह पापकार्य है जो आप छूट जाना चाहते हैं? अिसे धर्मकार्य समझकर बार-बार करते रहें, जीवन-भर करते रहें। लोग कहते हैं कि यह बहुत कठिन है। लेकिन मैं कहता हूं कि कठिन नहीं है। अेक आदमीने कहा कि हम हर महीने आपको पच्चीस रुपये देंगे और जिंदगी भर देते रहेंगे। मैंने कहा, यह ठीक नहीं है। अगर कल आप दरिद्र बन गये, तो आपको अपनी प्रतिज्ञा तोड़नी होगी। लेकिन निश्चित रकमके बदलेमें अगर आप अपना छठा या कोअी भी हिस्सा देनेका तय करेंगे, तो अुसका जीवनभर पालन करना आपके लिअे शक्य होगा। फिर आपको अगर आधी रोटी ही खानेको मिली तो अुसमें से भी छठा हिस्सा आप दे देंगे। अिस प्रकार यदि मेरा विचार समझमें आ जाय तो अुसका बोझ नहीं महसूस होगा। जिस प्रकार आदमीको शरीरका बोझ नहीं लगता, अुसी प्रकार धर्मका बोझ भी नहीं लगना चाहिये। धर्म-विचार जीवनदायी विचार होता है।

अपरिग्रहसे सांसारिक शक्ति

खासकर हमें अेक चीज देखनी है कि अपरिग्रहमें शक्ति भी है। अपरिग्रहमें शुद्धि है, अिसका भान तो हमें रहा है, लेकिन अुसमें शक्ति है अिसका भी खयाल करना चाहिये। अुसमें सांसारिक शक्ति है जिससे अुत्तम जीवन चलता है। मान लो कि गांधी-स्मारक-निधिके दस करोड़ रुपये अिकट्ठे हुअे हैं, अुसके बदले सौ करोड़ अिकट्ठे होते तो अुससे क्या होता? हमारी पद्धतिमें तो घर-घरमें बैंक हो जाता है। अुसकी शक्तिकी कोअी सीमा नहीं। आदान-प्रदान भी अुसमें स्थानिक ही होता है। अिसलिअे वह अति सुलभ योजना बन जाती है, और अुसमें से सीधी सामूहिक शक्ति पैदा होती है, रचना होती है, संघटना होती है। त्याग और समताका महत्त्व हमने माना है, लेकिन ये सब शक्तियां हैं, अिस दृष्टिसे हमें सोचना होगा, समझना होगा। हमें जो जमीन आज तक मिली है, अुसकी औसत कीमत यदि सौ रुपया अेकड़ समझ लें, तो भी बीस लाख अेकड़के बीस करोड़ रुपये हुअे। यदि मैंने बीस करोड़ रुपये अिकट्ठे किये होते, तो अुसमें से कितनी झंझटें पैदा होतीं, और कितना पाप होता!

दाताके वचन पर ही भरोसा

अेक अखबारवालेने मुझ पर व्यंग किया था कि विनोबाको तो न जमीन चाहिये, न संपत्ति। अुसे तो केवल दानपत्र चाहिये। यह तो कागज मांगनेवाला देव है। फूलसे संतोष माननेवाले देवोंको जिस तरह तुम फूलोंकी माला चढ़ा देते हो, अुसी तरह अिसके गलेमें दान-पत्र डाल दो, तो तुम्हारी "खरचत नहीं गठरी भजो रे भैया राम गोविंद हरि।" अुसने तो खैर व्यंग किया था, लेकिन दरअसल बात वही है। हमारे दिलमें अुस आदमीके पैसेके बनिस्बत अुसके वचनकी कीमत कहीं अधिक है। संपत्ति-दानमें आज तो यह संरक्षण है कि अुसका विनियोग कैसे होगा, अिसका निर्देश मैं दूंगा। लेकिन जब करोड़ों दान अिस प्रकार मिलने लगेंगे, तब निर्देश देना भी संभव नहीं होगा; तब तो अपने आप बंटवारा होने लगेगा।

तो अब जब कि बंटवारेका सवाल आ रहा है, तब अिस पर ध्यान देना होगा। अिसमें सरकारकी मदद लेनेसे अधिक काम नहीं होनेवाला है। क्योंकि सरकार तो अेक बालटी है। जनता कुआं है। अगर कुअेंमें ही जल नहीं होगा, तो बालटीमें आयेगा कहांसे? लेकिन जो काम सरकार नहीं कर सकेगी वह जनता करेगी। सरकारकी अिससे पूर्ति होगी। अब दो-चार महीनोंमें अिस विचारको अमली स्वरूप मिलना चाहिये।*

विनोबा

* खादीग्राम, जमुअीमें, ३ सितंबरको दिये हुअे प्रवचनसे।

www.vinoba.in

भूदान-आन्दोलनकी नअी धारा

अेक मित्रने श्री रामकृष्ण मठ — मद्रासके अंग्रेजी मासिक 'वेदान्त केसरी' का सितम्बरका अंक दिखाते हुअे मेरा ध्यान अुसके 'भूदान-आन्दोलनकी कुछ धारायें' नामक लेखकी तरफ खींचा। 'वेदान्त केसरी' जैसा दार्शनिक और धार्मिक पत्र अिस आन्दोलनमें दिलचस्पी ले यह आश्चर्यकी बात नहीं, क्योंकि पत्रके शब्दोंमें श्री विनोबाके आन्दोलनके लिअे "अैसी विशिष्ट सभ्यता और परंपराओंकी भूमिकाकी आवश्यकता है, जो केवल भारतमें ही विकसित हो सकती थीं।"

पत्र आगे कहता है: "श्री विनोबाका अपने आन्दोलनको अन्तःप्रेरणासे 'भूदान-यज्ञ' कहना बड़ा महत्त्व रखता है। भारतके लोग 'यज्ञ' और 'दान' जैसे शब्दोंको केवल अक्षरोंके समूह ही नहीं मानते। वे हमारी राष्ट्रीय प्रेरणाके मानो विद्युत्-प्रवाह हैं। . . . यह बड़े सौभाग्यकी बात है कि राष्ट्रीय प्रेरणाके अिन विद्युत्-प्रवाहोंका संचार आजके भारतीय वातावरणमें करने और आजकी नग्न आवश्यकताओं और पाशविक आवेगोंके जमानेमें अुन्हें अत्यन्त आवश्यक नअी दिशा देनेका काम भगवानने विनोबाजी जैसे संतको सौंपा।"

भूदान-आन्दोलनके अिस पहलूकी प्रशंसा करते हुअे पत्र अेक-दो महत्त्वपूर्ण बातोंकी तरफ अिशारा करता है। अेक है: "अगर दुर्भाग्यसे भूदान-आन्दोलन अहिंसक मार्गको छोड़कर दबाव या जबरदस्तीके रास्ते चला गया, तो वह अिस राष्ट्रको अपार हानि पहुंचा सकता है। . . . अिस बातकी सावधानी रखनी होगी कि दृष्टिकी शुद्धताको सफलताकी भूख और निराशासे पैदा होने-वाला क्रोध कहीं दूषित न कर दे।"

हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि 'वेदान्त केसरी' की यह चेतावनी केवल सही और अुपयुक्त ही नहीं है, बड़ी सामयिक और आवश्यक भी है। पत्र अिस आन्दोलनमें श्री जयप्रकाश नारायण जो भाग ले रहे हैं अुसकी चर्चा करता है और अुन्होंने हालमें मद्रास और दूसरी जगहों पर जो कुछ कहा अुस परसे नीचेके शब्दोंमें हमें हलकी चेतावनी देता है:

> "अगर अखबारोंकी रिपोर्ट सच हो, तो अैसा मालूम होता है कि श्री जयप्रकाश कभी-कभी भावी दाताओंके मनमें अेक प्रकारकी भय-ग्रन्थि पैदा करना चाहते हैं। जब आप कहते हैं कि 'अगर तुम जमीन नहीं दोगे तो कोअी न कोअी अुसे छीन लेगा, अिसलिअे बेहतर है कि तुम्हीं दे दो', तो हमें डर है कि आप मनुष्यके भीतर रही अच्छाअी पर निर्भर नहीं करते, बल्कि मनुष्यमें भय-ग्रन्थि पैदा करनेकी अपनी शक्ति पर निर्भर करते हैं। हम नहीं जानते कि अिसे अहिंसा कहा जा सकता है या नहीं।"

अिस लेखके साथ ता० २-९-'५३ को नये जोड़े हुअे भागमें लेखक आगे कहता है कि: "भूदान-आन्दोलन मार्क्स द्वारा शुरू किये गये आन्दोलनसे जरा भी कम क्रान्तिकारी नहीं है। लेकिन अगर श्री विनोबाका आन्दोलन अनजानमें भी मार्क्सके आन्दोलनकी गर्जनाको अपनानेकी कोशिश करेगा, तो वह सचमुच अपनी ही क्रान्तिकारी प्रेरणाकी धारको बोथरी कर डालेगा। शुद्ध अहिंसामें मिलावटकी गुंजाअिश हो ही नहीं सकती। मिलावटवाली अहिंसा भयंकर है, क्योंकि वह भ्रमपूर्ण प्रतिक्रान्ति है। शुद्ध अहिंसा विधायक रूपसे अजेय होती है, क्योंकि वह हिंसासे सर्वथा भिन्न है। नकली हिंसा अपने ढंगसे सच्ची हिंसा जैसी कारगर कैसे हो सकती है? अशुद्धता दोनों तरफ क्रान्तिकारी प्रेरणाका नाश करनेवाली होती है — अेककी विनाशक धार बोथरी हो जाती है, दूसरीकी सर्जक धार बोथरी हो जाती है।

श्री जयप्रकाशकी मद्रास प्रेस-कान्फरेंसकी 'हिन्दू' (२-९-'५३) में छपी रिपोर्ट अुद्धृत करते हुअे 'वेदान्त केसरी' नीचेका नया प्रश्न खड़ा करता है। वह कहता है: "श्री जयप्रकाशकी रायमें '. . . जमीन-मालिकोंको बेजमीनोंके लिअे जमीन देनेको राजी करनेके लिअे किया जानेवाला सत्याग्रह भूदान-आन्दोलनके ध्येय और पद्धतिके खिलाफ नहीं जाता।'

और वह पूछता है: "क्या किसी भी साधनसे जमीनके कानूनी मालिकको अुसकी **मर्जीके खिलाफ** जमीन छोड़नेके लिअे राजी करना, हम यह भी कह सकते हैं कि मजबूर करना, सत्याग्रह कहा जा सकता है? क्या अिस तरह दबाव डाल कर जमीन लेनेकी क्रिया दान या नैतिक कर्म भी कही जा सकती है? क्या श्री विनोबाने भूदान-आन्दोलनकी सफलताके लिअे अैसा सत्याग्रह करनेकी अपने कार्यकर्ताओंको अनुमति दे दी है?"

यह सब पढ़कर पाठक अैसा कहनेको भी प्रेरित हो सकते हैं कि अूपरकी पंक्तियोंके लेखकने अनजानमें ही खेड़ सत्याग्रहके नामसे पुकारे जानेवाले पारडी-आन्दोलनकी आगाही अपने लेखमें कर दी थी। प्रजा-समाजवादी पार्टीके लोग यह आन्दोलन कर रहे हैं। पार्टीके नेता आचार्य कृपलानीने कुछ दिन पहले बलसाड़में जिन शब्दोंमें अिस आन्दोलनको अपना आशीर्वाद दिया, वे 'वेदान्त केसरी' के लेखमें व्यक्त किये गये भय और आशंकाको और मजबूत बनाते हैं।

२७-९-'५३ **मगनभाअी देसाअी**

(अंग्रेजीसे)

नवां अ० भा० नयी तालीम संमेलन

नवां अखिल भारतीय नयी तालीम सम्मेलन आगामी नवम्बर माहकी ता० ११ से १६ तक टीटाबर (आसाम) में हो रहा है। सम्मेलनके प्रथम तीन दिनोंमें नयी तालीमके क्षेत्रमें काम करनेवाले कार्यकर्ताओंका विशेष सम्मेलन होगा। बादके तीन दिनोंमें खुला सम्मेलन होगा, जिसमें पूर्व-बुनियादी, बुनियादी, अुत्तर-बुनियादी, ग्राम-विश्वविद्यालय और प्रौढ़-शिक्षा संबधी विचार-विमर्श होगा। सम्मेलनके अंतर्गत ही नयी तालीम प्रदर्शनीका आयोजन किया जा रहा है।

यह पहला ही अवसर है जब आसाममें अखिल भारतीय नयी तालीम सम्मेलन बुलाया जा रहा है। आसामके शिक्षा-मंत्री और रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी यह अुत्कट अिच्छा है कि अिस सम्मेलनमें अधिकसे अधिक प्रतिनिधि पधारें और अिस प्रकार आसाममें चल रहे बुनियादी शिक्षाके कामको प्रेरणा दें। नयी तालीमके कार्यकर्ताओंको अिस सम्मेलनमें भाग लेनेके लिअे सादर निमंत्रण है।

सम्मेलनमें आनेवाले प्रतिनिधियोंके लिअे रेल-किरायेमें रियायतके लिअे रेल-मंत्रालयको लिखा गया है; वहांसे स्वीकृति मिलने पर प्रतिनिधियोंको रियायत-पत्र भेजे जायेंगे। सम्मेलनमें भाग लेनेके अिच्छुक सज्जन जल्दसे जल्द अपने आनेकी सूचना हमें भेजनेकी कृपा करें, ताकि अुनके लिअे समुचित प्रबंध किया जा सके।

सेवाग्राम **अो० डब्ल्यू० आर्यनायकम्**
मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

भूदान-यज्ञ
विनोबा भावे
कीमत १-४-० डाकखर्च ०-६-०
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

राष्ट्रको गांधी-जयन्तीका सन्देश

१

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।

५ अगस्त १९५३.

बहुत दिनों से हम महात्मा गान्धी का जन्म दिन बहुत उत्साह से मनाया करते हैं। महात्माजी स्वयं चाहते थे कि इस दिन को उनके जन्म दिवस के रूप में न मनाकर चर्खा जयन्ती के रूप में मनाया जाये और अनेकानेक स्थानों में इसे उसी रूप में चर्खा कातकर और खादी का प्रचार करके मनाया जाता है। इस साल भी इसे उत्साह के साथ मनाना परमावश्यक है।

खादी के लिये भारत सरकार की ओर से भी सहायता देने का निश्चय कर लिया गया है और इसके संगठन और परिवर्धन के लिये एक बोर्ड भी बना दिया गया है। खादी की एक बड़ी कठिनाई हमेशा से यह रही है कि इसके बनाने में खर्च कुछ अधिक पड़ने की वजह से वह महँगी पड़ती है। अब सरकार की ओर से इसे सस्ती करके लोगों में बेचने का प्रयत्न किया गया है। खादी बहुतेरे ऐसे लोगों को रोज़ी देती है जो किसी दूसरे प्रकार से उपार्जन नहीं कर सकते और इसलिये वह बेकारी दूर करने का एक बड़ा साधन हो जाती है। विशेष करके इसी बात को ध्यान में रखकर खादी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक माना गया है। पहले कांग्रेस के बड़े से बड़े कार्यकर्ता खादी लेकर दूसरों के यहां प्रचार के विचार से बेचा करते थे। अब इसकी बिक्री में किसी प्रकार की बाधा नहीं है, बल्कि सब ओर से इसको प्रोत्साहन मिल रहा है। इसलिये खादी बोर्ड ने लोगों की सुविधा के लिये उपाय निकाले हैं जिसमें लोग अपनी पसन्द के अनुसार जब चाहें और जैसी खादी चाहें ले सकें और साथ ही जयन्ती के अवसर पर उनको यह देखने को मिल जाये कि कितनी खादी बिकी। इस मरतबे इस जयन्ती के अवसर पर एक करोड़ रुपये की खादी बेचने का निश्चय किया गया है और खादी बोर्ड की ओर से इसका प्रयत्न किया जा रहा है। आशा है सभी देशप्रेमी इसमें सहायता करके खादी के प्रचार में सहायक बनेंगे और यश के भागी होंगे।

राजेन्द्र प्रसाद

५-८-५३

www.vinoba.in

२

हममें से बहुतोंने खादीमें विश्वास किया है और अुसको बहुत वर्षोंसे पहनते आये हैं। आजादीकी लड़ाअीके दिनोंमें हमारे लिअे यह स्वतंत्रताकी वर्दी थी, साथ ही अिसकी वजहसे हम भारतके सामान्य नागरिकोंकी सतह पर पहुंच जाते थे, जिनकी भलाअी ही हमारी सब कोशिशोंका मकसद है। हमारा देश, बदक़िस्मतीसे, बहुतसी अलग-अलग जात-पांत होनेकी वजहसे काफी तकलीफ अुठा चुका है। वे जात-पांतके भेद आज भी जारी हैं और हमारे राजनीतिक तथा सामाजिक जीवनको नुकसान पहुंचाते रहते हैं।

पुराने जमानेसे चली आनेवाली अिस जात-पांतके अलावा हमारे सामाजिक जीवनमें आर्थिक असमानताके कारण और भी फर्क मौजूद हैं। अिससे छुटकारा पाना ही हमारा अुद्देश्य रहता है। अिसी बातकी ओर भारतीय संविधानने अपनी राज्यनीतिके निर्देशक तत्त्वोंमें जोर दिया है। वह बहुत बड़ा सवाल है, जिसके माने यह हैं कि हमको अपने तमाम सामाजिक ढांचेमें बुनियादी तब्दीलियां करनी होंगी। हम जरूर अुस तरफ बढ़ रहे हैं, मगर हमारी रफ्तार काफी तेज नहीं मालूम पड़ती।

जो भी हो, कुछ अैसी चीजें हैं जिन्हें हममें से हर कोअी कर सकता है, और अैसी ही अेक चीज यह है कि हम सब खादी पहनें और अिस्तेमाल करें, और अिस तरह, कम-से-कम, कपड़ोंके अुस बाहरी फर्कको दूर करें, जो आज समृद्ध व्यक्तियों तथा गरीबोंमें अंतर करता है। खादी कम-से-कम अितना तो करती ही है कि वह हमारे अन्दर अपने देशकी विशाल जनताके साथ अेक-रूपताकी भावना पैदा करती है। खादीसे भाअीचारेका और अेक सामान्य प्रयासका वायुमंडल पैदा होता है।

अिसके अलावा, अिससे सीमित तौर पर बेरोजगारीके मसलेको हल करनेमें कुछ सहायता मिलती है। मैं यह नहीं कहता कि खादीके पहननेसे ही बेरोजगारीका मसला हल हो जायगा, पर अिससे कुछ तो मदद हो ही जाती है, और अिसीके साथ हमारे अन्दर बराबर यह अेहसास बना रहता है कि हमारे अूपर बेरोजगारीके अिस मसलेको हल करनेकी जिम्मेदारी है।

आज लोगोंको और अधिक रोजगार-धन्धा दिलाना हम सबके लिअे अेक बड़ा मसला हो गया है। अिससे हमको कअी मोर्चों पर लड़ना होगा। पर यह अधिकाधिक स्वीकार किया जाने लगा है कि अिस मसलेको हल करनेका अेक बड़ा तरीका यह है कि हम ग्रामीण और छोटे-मोटे अुद्योगोंको बढ़ावा दें।

खादी हमारे मुख्य ग्रामीण अुद्योगोंमें से अेक है। और खादी महज अुस स्वतंत्रताका चिन्ह ही नहीं है, जिसके लिअे हमने जद्दोजहद की और जिसे हमने जीता, पर साथ ही यह अिस बातका भी चिन्ह है कि हमारी सारी जनतामें समान प्रकारकी दोस्तीकी भावना रहनी चाहिये। और आजकी सब विषमताओंको दूर होना चाहिये, यह भी बहुत ही अहम बात है।

अिसलिअे हम सबको चाहिये कि हम खादी पहनें, अुसको अिस्तेमाल करें और हर तरीकेसे अुसे प्रोत्साहन दें। यह काम सबका है, हमारा चाहे जो दर्जा हो, और हम चाहे जो काम करते हों, चाहे हम सरकारी आदमी हों या गैर-सरकारी।

खास तौरसे हमको यह काम गांधी-जयन्ती-दिवस पर करना चाहिये, जिस दिन हमारे दिमागोंमें पुरानी याददाश्तोंकी भीड़ जमा हो जाती है।

(२०-९-'५३के 'आर्थिक समीक्षा'से) **जवाहरलाल नेहरू**

'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंसे

ता० १२-९-'५३ के 'हरिजनबंधु' में छपा 'शिक्षा और सेवा'* नामक लेख पढ़कर कुछ पाठकोंने मुझे पत्र लिखे हैं। अुनमें वे लिखते हैं कि अूपरके लेखमें जिन पत्रलेखकका जिक्र आया है, अुनके द्वारा 'हरिजन' पत्रोंके बारेमें प्रकट किया गया मत ठीक नहीं है। अिन पत्रोंमें हमें पहलेकी तरह ही रस आता है; वे चालू रहने चाहिये। कुछ लोग यह भी लिखते हैं कि ये पत्र घाटेमें चल रहे हैं, अैसा हमें अिस लेखसे ही पता चलता है; और अिनके प्रति वे अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं। अुनमें से अेक भाअीका यह सुझाव है कि अिस स्थितिका सामना करनेके लिअे ज्यादा नहीं तो कम-से-कम तीन बरस तकके लिअे अेक 'हरिजन-पत्र सहायता फंड' अिकट्ठा करना चाहिये। दूसरे अेक भाअी अिसके लिअे अेक निश्चित रकम देनेकी भी सूचना करते हैं। अिन सबका मैं नवजीवन ट्रस्टकी ओरसे आभार मानता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वे अिन पत्रोंमें दिलचस्पी लेकर अिन्हें अपने पांवों पर खड़े होने लायक बनानेकी भरसक कोशिश करें।

आजसे करीब डेढ़ साल पहले जब अिन पत्रोंकी ग्राहक-संख्या घटकर ९ हजार पर पहुंच गअी थी, तब स्वर्गीय श्री कि० घ० मशरूवालाने अुस हकीकतकी तरफ लोगोंका ध्यान खींचा था। लोगोंने तुरन्त अुस बातको अुठा लिया और पत्रोंकी ग्राहक-संख्याको लगभग १८ हजार तक पहुंचा दिया था। अितनी संख्या हो तो तीनों पत्र परस्पर मिलकर अेक-दूसरेका खर्च पूरा कर सकते हैं।

अिस वक्त तीनों पत्रोंके ग्राहक १२ हजारके आसपास हैं। पिछले साल जो ९ हजार ग्राहक बढ़े थे, अुनमें से पिछली फरवरीमें साल पूरा होने पर लगभग ४॥ हजार ग्राहकोंने फिरसे पत्र चालू न किये। अिस तरह नये वर्षमें ग्राहक अेकदम घट गये हैं।

पिछले कुछ अरसेकी ग्राहक-संख्याके तफसीलवार आंकड़े व्यवस्थापकजीने अिस अंकमें दिये हैं, जो पाठक अन्यत्र देखेंगे। अिसलिअे अुस विषयमें अधिक चर्चा करनेकी जरूरत नहीं रह जाती।

आंकड़ोंको देखकर अेक बात तुरन्त ध्यानमें आयेगी कि 'हरिजन' पत्रोंके अंग्रेजी और हिन्दी संस्करणके ग्राहक बहुत कम हो गये हैं। व्यवस्थापकजीका कहना है कि अिन दोमें से कोअी अेक संस्करण बन्द हो जाय, तो घाटेमें काफी सुधार हो सकता है। बन्द करनेके लिअे ही मजबूर होना पड़े, तो अुचित यही होगा कि हिन्दी संस्करणके बजाय अंग्रेजी संस्करण पहले बन्द किया जाय। नवजीवन ट्रस्टका अेक पुराना प्रस्ताव भी अिसी मतलबका था कि अगर 'हरिजन' (अंग्रेजी) की ग्राहकसंख्या ६,५०० जितनी न हो जाय, तो अुसे बन्द कर देना होगा। (देखिये, 'हरिजनसेवक' के ता० २३-२-'५२ के अंकमें पृष्ठ ४४५ पर छपा 'हरिजन-पत्र चालू रहेंगे' नामक लेख।)

कुछ पाठक-मित्र आश्चर्यके साथ कहते हैं कि देशके विभिन्न राज्योंकी सरकारें अिरादा कर लें, तो काफी संख्यामें ग्राहक बढ़ा सकती हैं। सरकारके अलग-अलग दफ्तर और संस्थायें पत्र-पत्रिकाओं पर पैसे खर्च करती ही हैं। तो 'हरिजन' पत्र लेनेमें अुन्हें क्या आपत्ति हो सकती है? देशके पुस्तकालय, स्कूल-कालेज और ग्रामविकास योजनाके 'कम्यूनिटी प्रोजेक्ट' केन्द्र भी चाहें और ध्यान दें, तो अिस विषयमें बहुत कुछ कर सकते हैं।

* 'हरिजनसेवक' में यह लेख ता० १९-९-'५३ के अंकमें छपा है।

www.vinoba.in

अूपर मैंने अेक पाठकके दान और मदद-फंड अिकट्ठा करनेके सुझावका जिक्र किया है। अुसके बारेमें दो शब्द कह दूं: नवजीवनके व्यवस्थापक-ट्रस्टी मुझे बताते हैं कि ट्रस्टने कभी दानकी रकम लेकर आज तक अपना काम नहीं किया। अिस तरह काम करनेकी अुसकी नीति नहीं है। अभी तक यह संस्था गांधीजीकी प्रेरणा और संकल्प-बलके आधार पर अपने अनेक प्रकारके सेवकोंके त्याग, सेवा, प्रामाणिक परिश्रम और अुत्साह-अुमंगसे चलती आअी है; यही अिसकी बुनियाद रही है। नये युगमें भी अिस मूल नीतिमें कोअी परिवर्तन नहीं करना चाहिये — नहीं किया जा सकता। अिसलिअे मदद-फंड खड़ा करनेकी सूचना ठीक नहीं है। परन्तु जैसा कि मैंने अेक पाठक-मित्रके पत्रके जवाबमें लिखा है, अिस पत्रके प्रेमी पाठक ग्राहक बढ़ाकर या धनी हों तो ज्यादा चन्देकी रकम खुद देकर या प्राप्त करके '**चन्दा** मदद-फंड' खड़ा कर सकते हैं। अुस फंडमें से अैसे लोगोंको मुफ्त या कम चन्दे पर पत्र भेजे जा सकते हैं, जो पत्र पढ़नेके अिच्छुक होते हुअे भी चन्दा नहीं भर सकते। अेक पाठकने सात ग्राहकोंका चन्दा भरकर अमुक प्रकारके पाठकोंको मुफ्त पत्र भेजनेका लिखा था। अुनकी सूचनाके मुताबिक व्यवस्था कर दी गअी है। अैसा प्रयत्न किया जाय, तो संस्थाको कोअी आपत्ति नहीं होगी।

यह लेख गांधी-जयन्ती पर निकलनेवाले अंकमें छपेगा। यह अुचित ही है। अुन महापुरुषने हमारे राष्ट्रको रामराज्यकी ओर ले जानेका जो मार्ग बताया है, अुस पर चलना अिन पत्रोंका काम है। अगर जनता यह चाहती हो, तो अुसे अिन पत्रोंको यह काम करनेके लिअे जरूरी खर्च देना चाहिये। यही अुसकी कसौटी है। अैसा कहनेमें अिनके संचालकों पर भी जिम्मेदारी आती है, और संपादकके नाते मैं अपनी जिम्मेदारीको भी समझता हूं। पिछले लेखमें जैसा मैंने कहा है, मैं अपनी अिस जिम्मेदारीको पूरा करनेका भरसक प्रयत्न करता हूं। अिसमें मैं पाठकोंकी मदद और आशीर्वाद चाहता हूं। मेरी प्रार्थना है कि वे 'हरिजन' पत्रोंको अपने पास पहुंचनेवाली साप्ताहिक चिट्ठी मानें, अुनमें जिन बातोंकी चर्चा होती है अुसमें रस लें और अुस विषयमें जो कुछ कहने-बताने लायक हो वह बताते रहें। अैसा होगा तो अिन पत्रोंकी सेवा-शक्ति बढ़ेगी। अिसी तरह जीवनके हर क्षेत्रमें लोग अपनी सेवा-शक्तिको बढ़ानेका ध्यान रखकर काम करें, तो ही हमारे देशकी समस्यायें हल होंगी और अुसका काम आगे बढ़ेगा। राष्ट्रोंकी अुन्नति सत्ताके बलसे नहीं, सेवाकी मूलभूत पूंजीसे ही होती है। सत्ता-बल ज्यादासे ज्यादा अुसके पीछे रहकर अुसकी शोभा बढ़ा सकता है। गांधीजीके जन्म-दिवस पर अुनके सिखाये हुअे सेवाधर्मके अिस महामंत्रको हममें से हरअेक स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध, गरीब-अमीर याद करे।

२४-९-'५३ **मगनभाअी देसाअी**

(गुजरातीसे)

अुस पारके पड़ोसी

[पूर्व अफ्रीकाके प्रवासका रोचक वर्णन]

काका कालेलकर

कीमत ३-८-० डाकखर्च ०-१०-०

भावी भारतकी अेक तसवीर

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-०-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

पारडी तालुकेकी जमीनके कुछ आंकड़े

पारडी तालुकेमें आजकल जो आन्दोलन चल रहा है, अुसे समझनेमें अुपयोगी सिद्ध होनेवाली जानकारीके आंकड़े सूरत जिलेके अेक लोकसेवकसे हमें प्राप्त हुअे हैं। अुनका कहना है कि अुन्होंने ये आंकड़े अधिकसे अधिक सावधानीके साथ अिकट्ठे करके और सरकारी रेकार्डसे मिलाकर भेजे हैं। अुसमें से कुछ भाग नीचे दिये गये हैं:—

खुदकाश्तके लिअे ली गअी जमीन

सन्	स्वेच्छासे छोड़ी हुअी जमीन	लगान नहीं देनेके कारण	मालिकों द्वारा खुदकाश्तके लिअे ली गअी	कुल
	अे० गुं०	अे० गुं०	अे० गुं०	अे० गुं०
१९४९-५०	९१९-३६	६-१४	३१-२५	९५७-३५
१९५०-५१	३८३-१९	६४-२०	३२-१३	४८०-१२
१९५१-५२	२९४- १	५६- ६	२९- १	३७९- ८
कुल	१,५९७-१६	१२७-०	९२-३९	१,८१७-१५

अिस तरह सब मिलाकर तीन सालमें १,८१७ अेकड़ १५ गुंठा यानी लगान पर अुठाअी हुअी कुल जमीनका १४ प्रतिशत काश्तकारोंके पाससे जमीन-मालिकोंके हाथमें गया है।

खुदकाश्तकी और लगान पर अुठाअी हुअी जमीन

आज जमीन-मालिक और असामी कितनी कितनी जमीन जोतते हैं, अिसके आंकड़े अिस प्रकार हैं:

असामियोंके पास कुल जमीन	जमीन-मालिक खुद जो जमीन जोतते हैं	कुल खेतीकी जमीन
१३,००० अेकड़	२३,००० अेकड़	३६,००० अेकड़

अिसमें मालिकोंके अधिकारमें जोती जानेवाली जो २३,००० अेकड़ जमीन है, वह छोटे-बड़े सब जमीन-मालिकोंके कब्जेकी है। अुसमें पिछड़े हुअे वर्गोंके किसानोंके कब्जेकी जमीन भी शामिल है। लगान पर दी हुअी जमीन १३,००० अेकड़ है, जिसमें से बहुतसी जमीन तो रानीपरजके छोटे काश्तकारोंके कब्जेमें है।

अनाजकी खेतीकी जमीन

पारडी तालुकेमें आज जितनी जमीन पर खेती होती है, अुतनी जमीन पर पिछले ५०-६० सालसे कभी नहीं हुअी थी।

आजसे करीब ६० बरस पहले पारडी तालुकेमें केवल ७,००० अेकड़ जमीनमें चावलकी खेती होती थी। अिसके बाद आजसे ४० बरस पहले १२,००० अेकड़ जमीनमें चावलकी खेती होने लगी। आजसे २०-२५ बरस पहले वह बढ़कर लगभग १७,००० अेकड़ हो गअी। आज सरकारी रेकार्डमें वह बढ़कर २४,५०० अेकड़ हो गअी है।

अिसके अलावा, पिछले तीन वर्षोंमें सरकारी रेकार्डमें जो घास-वाली जमीनके नामसे दर्ज थी, अैसी भी लगभग ३,००० अेकड़ जमीनमें चावलकी खेती होने लगी है।

अिस प्रकार पिछले ६० वर्षमें चावलकी खेतीकी जमीन ७,००० से बढ़कर २७,५०० अेकड़ यानी चौगुनी हो गअी है।

अिसके अलावा जिसमें नागली, कोदरा; अुड़द, अरहर, मूंगफली, अरंडी वगैराकी फसल पैदा की जाती है, अैसी कमसे कम ८,००० अेकड़ जमीन है।

बगीचेकी जमीन

फिर अिस भागमें आम, चीकू वगैरा फलोंके बगीचेवाली जमीन पहले शायद ही कहीं देखनेमें आती थी। अिस वक्त सरकारी रेकार्डमें अैसी २,३०० अेकड़ जमीन दर्ज है। और पिछले पांच बरसोंमें पड़ती जमीन जोतकर अुसमें भी नअी कलमें लगा दी गअी हैं। अिस तरह सब मिलाकर कमसे कम चारसे पांच हजार अेकड़ जमीनमें आम और दूसरे फलझाड़ लगाये गये हैं।

www.vinoba.in

खेतीकी जमीन बढ़ी है

अिस तरह २७,५०० अेकड़ जमीनमें चावलकी खेती, ५,००० अेकड़में बगीचे और लगभग ८,००० अेकड़ जमीनमें दूसरी फसलें मिलाकर कुल ४०,००० अेकड़से अूपर जमीनमें आज खेती हो रही है। अिस हिसाबसे लगभग ४८,००० अेकड़ जमीन घासवाली रही; जब कि सरकारी रेकार्डमें घासकी कुल जमीन ५४,००० अेकड़ बताअी गअी है। यानी घासवाली जमीनमें से ६,००० अेकड़ नअी जमीनमें खेती की जाने लगी है।

अितनी जमीनमें पहले कभी खेती नहीं हुअी थी। अिस ४०,००० अेकड़ जमीनमें से ३६,००० अेकड़ जमीनमें खेती होती है, यह तो सरकारी रेकार्डके आंकड़े भी सिद्ध कर देते हैं। अिसलिअे अिसमें खेतीकी नअी जमीन जोड़नेसे यह आंकड़ा ४०,००० अेकड़ पर पहुंच जाता है।

जमीनकी मालिकीके बारेमें

पारडी तालुकेकी कुल ८८,५०० अेकड़ जमीनमें से व्यापारी वर्गके २५० से ३०० खातेदारोंके नाम पर १४,००० अेकड़ जमीन है; जब कि पारसियों और दूसरे बड़े जमींदारोंकी मिलकर कुल २०,००० अेकड़ जमीन बड़े ज़मींदारोंकी मालिकीकी है। और ६८,५०० अेकड़ जमीन छोटे जमींदारों और किसानोंके मालिकी हककी है। अर्थात् ७५ प्रतिशतसे भी ज्यादा जमीन छोटे जमींदारों और किसानोंके अधिकारमें है।

रचना-कार्यकी जरूरत

[कार्यकर्त्ताओंसे मेरी प्रार्थना है कि वे यह जानकारी भी प्राप्त करें कि पारडी तालुकेमें कितने परिवार बेजमीन हैं और अुनमें बांटनेके लिअे कितनी जमीन किस तरहकी चाहिये। और अुसके लिअे जमीन-मालिकोंसे जमीन मांगें। अिस प्रदेशमें छोटे-बड़े ग्रामोद्योग शुरू करनेके बारेमें भी विचार होना चाहिये। क्योंकि अन्तमें केवल जमीन ही नहीं, बल्कि अुसके साथ फुरसतके समयका अुपयोग करनेके लिअे छोटे-बड़े गृह-अुद्योग भी जरूरी हैं। साथ ही, बुनियादी तालीम देनेवाली आश्रम-शालायें और समाज-शिक्षणके संस्कार-केन्द्र भी खोले जाने चाहियें। अिस तरहके रचना-कार्य करनेसे ही पारडीका सवाल हल हो सकेगा।

२३-९-'५३ —म० प्र०]

(गुजरातीसे)

अणु-बम गैरकानूनी घोषित किया जाय

११ मअी, १९५३ के 'पीस मेकर' में अेक पत्रलेखक लिखते हैं कि पश्चिमी जर्मनीके महिला-शान्ति-आन्दोलनकी अेक सदस्या रोम गअी और वेटीकनमें अुसका स्वागत किया गया। अुसने वहां यह अर्जी पेश की कि पोप अणु-बम और बरबादी व सर्व-नाशके सारे रासायनिक और जन्तु-युद्धके साधनोंको गैरकानूनी घोषित कर दें। अुसे जवाब मिला कि "**अगर लाखों-करोड़ों लोग अिस बातसे सहमत हों,** तो पोप अिस प्रस्ताव पर गंभीरतासे विचार करेंगे।" (मोटा टाअिप मूलके अनुसार) अिसलिअे पत्रलेखककी यह मांग है कि शान्तिके लिअे काम करनेवाले पोपके पास ज्यादासे ज्यादा दस्तखत भेजनेमें सहयोग दें। अुनका कहना है कि दस्तखतके लिअे जो फार्म लोगोंके पास भेजे जायं, अुन पर ये शब्द होने चाहिये: "मेरी प्रार्थना है कि अणु-बम और सारे रासायनिक और जन्तु-युद्धके संहारक हथियार गैरकानूनी घोषित कर दिये जायं।"

सारी दुनियाके लोगोंको अेक आवाजसे सब धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक सत्ताधारियोंसे यह मांग करनी चाहिये कि वे युद्धके अिन राक्षसी हथियारोंको गैरकानूनी घोषित करें।

म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

बेकारीका सवाल

[२९ अगस्त, १९५३ को अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्डके सदस्यों, भारत-सरकारके मंत्रियों और अुच्च अधिकारियोंके समक्ष प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरूने नीचेका भाषण दिया था।]

आज हम जो अुपस्थित हैं अुनमें से बाज अैसे हैं जिन्होंने तीस सालसे खादीका पैगाम समझनेकी कोशिश की है; बाज अैसे भी हैं, जो पैगामको न समझकर भी खादी पहनते हैं; और बाज अैसे भी हैं, जिनका अिस पैगामसे कोअी सरोकार नहीं रहा है। ये सब लोग आज जमा हुअे हैं, यह अच्छी बात है।

अिस वक्त अिस पैगामकी क्या अहमियत है? प्लानिंग-कमीशनने बहुतसे सवालों पर सोच-विचार किया है। अुनमें से बेकारीकी बात जोरोंसे आअी है। बेकारीका मुकाबला करनेके बहुतसे रास्ते हो सकते हैं। लेकिन घूमघाम कर सबसे ज्यादा असर करने-वाला रास्ता खादी-ग्रामोद्योगका ही दीखता है। आजकी दुनियामें खादीके स्थानके बारेमें बहस हो सकती है, पर अुसका जवाब तो यह है कि आज भी दुनियामें फाकेकी हस्ती है। यह क्या ताज्जुबकी बात नहीं है? अिस तरह बहस करना गलत बात है। मुल्ककी आजकी हालत समझकर अुसे काबूमें लाना चाहिये। अिसके लिअे बहुतसे रास्ते हो सकते हैं और अिन सबको लेना चाहिये। फिर भी यह अेक अैसा रास्ता है, जिसकी जगह और कोअी चीज नहीं ले सकती।

हम खादीके लिअे फिजा, वायुमंडल पैदा करें। हर आदमी कुछ न कुछ कर सकता है। कमसे कम खादी तो खरीद सकता है। अर्थशास्त्रके पंडित पंडिताअीकी बातें करते हैं, किन्तु पंडिताअी अिन्सानियतसे दूर हो जाती है। पंडित लोग दुनियाके भूखोंका हिसाब लगाने बैठ जाते हैं, लेकिन भूखोंको खाना देनेका नहीं सोचते। दफ्तरी काम भी अिन्सानियतसे दूर ही रहता है। भूखोंको खाना देनेकी कोशिश करनी चाहिये, क्योंकि सवाल कागजी कार्रवाअीसे हल नहीं होता है। और बेकारीसे मुल्कमें शोरगुल मच जाता है। आज हम अिन्कलाबी दुनियामें रहते हैं। अिसलिअे हमारे दिमाग भी अिन्कलाबसे भरे होने चाहिये। दबे हुअे दिमाग आजकी दुनियामें काम नहीं दे सकते। हमको बेकारीका हल निकालना ही चाहिये।

बेकारीका सवाल बड़ा अहम सवाल है। अुससे बंधे हुअे दूसरे सवाल भी हैं, जैसे मुल्ककी दौलत बढ़ाना और अुस दौलतको सबकी जेबमें फैलाना। ये सब बातें हम दोहराते रहते हैं, पर अमल करनेके वक्त हमेशा ही पंडिताअीकी बात करते रहते हैं। पर कोरी पंडिताअीसे बात नहीं चलती। आंकड़े कुछ भी हों पर यह वाकया है कि हिन्दुस्तानमें औरतें, मर्द और बच्चे भूखे हैं। आजाद हिन्दुस्तानकी शान और शौकतका अुनके लिअे क्या मलतब है?

खादी-ग्रामोद्योगकी ओर तीस सालसे हमारा झुकाव है। हम चाहते हैं कि औरोंका भी अिस ओर झुकाव हो। मुझे परेशानी होती है दो चीजोंसे। अेक कोरी पंडिताअीसे, जो अिन्सानियतको भुला देती है, और दूसरे फूहड़पनसे, जो हमारी जिन्दगीमें घुस गया है। मैं किसी शानदार चीज या कलाकी चीजके खिलाफ नहीं हूं, पर बहुत कम लोग खूबसूरती, शान और कलाको समझते हैं, और केवल पैसेकी तड़क-भड़क बनाते हैं। गलत या सही तरीकेसे अमीर होकर अैसी तड़क-भड़क बनाना गरीब हिन्दुस्तानमें ठीक नहीं दीखता।

खादीने अेक और बड़ी बात हासिल की है। अिसने तीस सालसे बराबरीकी भावना पैदा की है।

www.vinoba.in

हरिजनोंका मंदिर-प्रवेश

[ता० १९-९-'५३ के दिन देवघरके बैजनाथ मंदिरमें हरिजनोंके साथ प्रवेश करनेके समय जो घटना घटी, अुसके सम्बन्धमें श्री विनोबाजीने परडीह (भागलपुर)से ता० २०-९-'५३ को नीचेका वक्तव्य निकाला था।]

कल वैद्यनाथधाममें मैं हरिजनों और अपने कुछ साथियोंके साथ महादेवजीके दर्शन करनेके लिअे गया था। हम लोग महादेवजीके दर्शन तो नहीं कर सके, लेकिन अुनके भक्तोंके हाथकी मार आशीर्वादके रूपमें हमें मिली। अुसके सम्बन्धमें चारों तरफसे मुझसे पूछताछ की जा रही है, अिसलिअे मैंने यह वक्तव्य निकाला है।

शुरूमें ही मैं यह कह देना चाहता हूं कि जिन लोगोंने हम पर हमला किया अुन्होंने अज्ञानवश ही अैसा किया। अिसलिअे मैं नहीं चाहता कि अिसके लिअे अुन्हें कोअी सजा दी जाय। बल्कि मुझे यह जानकर खुशी होती है कि मेरे साथ जो सैकड़ों लोग थे, वे अिस हमलेके दरमिआन बिलकुल शान्त रहे। अितना ही नहीं, मेरे जिन साथियों पर बुरी तरह मार पड़ी, अुन्होंने मुझसे कहा कि मार खाते समय भी अुनके मनमें क्रोध नहीं था। मुझे लगता है कि भारत पर अीश्वरकी यह असीम कृपा है कि अुसके पास अैसे सेवक हैं, जो किसी मनुष्यके प्रति मनमें दुर्भावना या वैर नहीं रखते। जिन्होंने मारपीट की वे अितने क्रोधित हो गये थे कि स्त्री और पुरुषका भेद करना भी भूल गये थे। मेरा विश्वास है कि यह मनुष्यके भीतर रहे भेदासुरका अंतिम श्राप होगा, जो मनुष्य मनुष्यमें भेद करता है।

मैं न तो जबरदस्तीसे मंदिरमें घुसनेका अिरादा रखता था, न कानूनके बल पर मंदिरमें प्रवेश करना चाहता था। अिसके विपरीत, मेरा यह रिवाज रहा है कि जो मंदिर हरिजनोंके लिअे खुला न हो अुसमें न जाया जाय। लेकिन पूछने पर मुझे बताया गया था कि अिस मंदिरमें हरिजनोंको जानेकी पूरी छूट है। अिसलिअे शामकी प्रार्थनाके बाद हम भक्तिभावमें पगे दर्शनके लिअे गये। हम लोग रास्ते भर मौन रहे, और मैं महादेवकी स्तुतिमें गाये गये वैदिक मंत्रका ध्यान कर रहा था। जब अैसी स्थितिमें अचानक हम पर हमला हुआ, तो मैंने आनन्दका ही अनुभव किया। मैं सुखका अनुभव करते हुअे लौट पड़ा; लेकिन जब हम लौट रहे थे, हम पर हमला करनेवालोंका जोश और बढ़ गया। मेरे साथके लोगोंने मेरे आसपास घेरा बना लिया और सीधे मुझ पर किये गये प्रहार खुद झेल लिये। फिर भी मुझे यज्ञकी पूर्णाहुतिके रूपमें थोड़ी प्रसादी मिली। मुझे पुरानी घटनाका स्मरण हो आया जब अिसी तीर्थधाममें बापूको भी अैसे ही हमलेका शिकार होना पड़ा था। वैसा ही आशीर्वाद पाकर मुझे गौरवका अनुभव हुआ।

मैं कह चुका हूं कि मैं किसीको सजा दिलाना नहीं चाहता। लेकिन अिस घटनामें स्वतंत्र भारतके संविधानका स्पष्ट भंग हुआ है। छोटी-मोटी सजासे अिस क्षतिकी पूर्ति नहीं हो सकती। जरूरत यह देखनेकी है कि भविष्यमें अैसी घटनायें फिर न घटें। मेरी रायमें अगर सरकार अैसे मंदिरोंको अपने अधिकारमें लेनेका फैसला करे तो अनुचित नहीं होगा। अुससे शायद अैसे तीर्थ-धामोंका प्रबन्ध ज्यादा अच्छा हो जायगा। यह मेरा सुझाव नहीं हैं; मैं तो सिर्फ शब्दोंमें अपने विचार प्रकट कर रहा हूं।

यह विज्ञानका युग है। आज हरअेक धर्म बुद्धिकी कसौटी पर कसा जा रहा है। अगर हमारा समाज यह बात ध्यानमें रखे और अुसके अनुसार बरते, तो हर काम सुचारु रूपसे चलता रहेगा।

परडीह, २०-९-'५३
(अंग्रेजीसे)

'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहक-संख्या

गांधीजीके अवसानके बाद 'हरिजन' पत्र कुछ समयके लिअे बन्द रहे थे। अप्रैल १९४८ से अुनका प्रकाशन फिर जारी हुआ। तबसे आज तक अिन पत्रोंकी ग्राहक-संख्या कैसी रही है, अुसके कुछ आंकड़े नीचे दिये गये हैं।

तारीख	हरिजन	ह० बंधु	ह० सेवक	कुल
४-४-'४८	९,४५१	९,१०३	४,७१७	२३,२७१
१-२-'५२	२,८४०	३,८९०	२,२७०	९,०००
१३-९-'५२	४,४७५	७,४०८	६,०२४	१७,९०७
१-२-'५३	४,५३५	७,६३०	६,४३५	१८,६००
१-३-'५३	३,३७५	५,४४१	५,३८५	१४,२०१
१-९-'५३	३,१५०	४,७७७	३,६२०	११,५४७

अूपरके आंकड़ोंसे पाठक देख सकेंगे कि पिछले ६-७ महीनोंसे 'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहक-संख्या घटती जाती है।

गांधीजीके अवसानके बाद श्री किशोरलाल मशरूवालाके संपादकत्वमें पहला अंक निकला, तब तीनों पत्रोंकी कुल ग्राहक-संख्या २३,२७१ से शुरू हुअी थी।

फरवरी १९५२ में पत्रोंकी ग्राहक-संख्या घटकर ९००० हो गअी। अिसलिअे ट्रस्टको तीनों पत्र बन्द करनेकी सूचना निकालनी पड़ी। लेकिन लोगोंकी विनतीसे ट्रस्टने अपने प्रस्ताव पर फिरसे विचार करके पत्रोंका प्रकाशन जारी रखा।

ट्रस्ट और श्री कि० घ० मशरूवालाकी प्रार्थनासे पत्रोंके ग्राहक बढ़े। यह बढ़ती १९५२-'५३ के सालमें हुअी।

ता० १-३-'५३ से 'हरिजन' पत्रोंका नया वर्ष शुरू हुआ। पिछले साल ग्राहक-संख्यामें जो बढ़ती हुअी थी, अुसमें फिर धीरे-धीरे कमी होती रही है। यह अूपरके आंकड़ोंसे देखा जा सकता है। अिसलिअे पत्रोंसे होनेवाला घाटा बढ़ता जाता है। तीनों पत्रोंमें अंग्रेजी और हिन्दी संस्करणोंके ग्राहक बहुत कम हैं, और अंग्रेजीके सबसे कम हैं। अंग्रेजीके ग्राहक काफी न बढ़ें, तो ट्रस्टको अुसे बन्द करनेका विचार करना पड़ेगा। अथवा, गुजराती और हिन्दी संस्करणोंके ग्राहक अितने बढ़ने चाहियें कि कम ग्राहक होते हुअे भी अंग्रेजी संस्करणका घाटा अिनके ग्राहकोंसे पूरा किया जा सके। अिस विषयमें संपादकके नाते श्री मगनभाअी देसाअीने अिस अंकमें जो कुछ लिखा है, अुसकी ओर ध्यान देनेकी पाठकोंसे विनती है।

२६-९-'५३ **जीवणजी देसाअी**

विषय-सूची

		पृष्ठ
बीसवीं सदीका शहीद	विलेम द सैण्डर्ज हेंड्रिक्स	२४१
संपत्ति-दानकी कल्पना और विनियोग	विनोबा	२४२
भूदान-आन्दोलनकी नअी धारा	मगनभाअी देसाअी	२४३
राष्ट्रको गांधी-जयन्तीका सन्देश	राजेन्द्रप्रसाद, जवाहरलाल नेहरू	२४४
'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंसे	मगनभाअी देसाअी	२४५
पारडी तालुकेकी जमीनके कुछ आंकड़े		२४६
बेकारीका सवाल	जवाहरलाल नेहरू	२४७
हरिजनोंका मंदिर-प्रवेश	विनोबा	२४८
'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहक-संख्या	जीवणजी देसाअी	२४८
टिप्पणियां :		
नवां अ० भा० नयी तालीम सम्मेलन	अी० डब्ल्यू० आर्यनायकम्	२४३
अणु-बम गैरकानूनी घोषित किया जाय	म० प्र०	२४७

www.vinoba.in